SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.15

जातीय समानता स्थापित करने के लिए तथाकथित उच्च जाति के महापुरुषों द्वारा किए गए प्रयासों विशेष रूप से स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

राहुल[1] एवं डॉ शगुफ्ता परवीन[2]
[1]शोधार्थी इतिहास विभाग, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़ एवं असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बद्री विशाल डिग्री कॉलेज फर्रुखाबाद ।
[2]शोध पर्यवेक्षक, असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास, मंगलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ़
[1]Email: rahulsaxenag@gmail.com & [2]Email: Sp.jameel@gmail.com

सारांश:

भारत में जातीय भेदभाव की समस्या भारतीय समाज की प्रमुख समस्या रही है जिसने भारतीय समाज की एकता को खंडित किया है। एक कालखंड में अस्पृश्यता की भावना के साथ यह एक सामाजिक कलंक बन गई थी। जातीय भेदभाव की समस्या ने भारतीय समाज के साथ-साथ भारतीय राष्ट्र की एकता को भी विपरीत रूप से प्रभावित किया। आधुनिक भारत में जातिगत भेदभाव को दूर करने के लिए अनेक महापुरुषों ने प्रयास किये। इन महापुरुषों में केवल तथाकथित निम्न जाति के महापुरुष ही शामिल नहीं थे अपितु देखा जाए तो जातिगत भेदभाव का विरोध करने वाले महापुरुषों में तथाकथित उच्च जाति के महापुरुषों की भी अग्रणी भूमिका रही है। इन महापुरुषों में राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज, स्वामी विवेकानंद, महादेव गोविंद रानाडे, विनायक दामोदर सावरकर, छत्रपति शाहू जी महाराज, महात्मा गांधी आदि प्रमुख थे। तथाकथित उच्च जाति के महापुरुषों का संघर्ष इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण था कि उनके द्वारा जातीय समानता का उद्घोष करने के कारण उन्हें अपनी जाति के भी विरोध का सामना करना पड़ता था।

प्रमुख शब्द: जाति, वर्ण, आर्यसमाज, शुद्धि आंदोलन, मंदिर प्रवेश आंदोलन, पुरुष सूक्त

1.0 प्रस्तावना

'जाति' भारतीय समाज की प्रमुख विशेषता रही है। इसने भारतीय समाज तथा राष्ट्र में एकता स्थापित करने में एक प्रमुख बाधा उत्पन्न की है। जाति व्यवस्था की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न सिद्धांत प्रस्तुत किए जाते हैं अनेक विद्वान जाति व्यवस्था की उत्पत्ति का आधार ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में ईश्वर के विभिन्न अंगों से विभिन्न वर्णों की उत्पत्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि ऋग्वेद तथा वैदिक साहित्य में जाति व्यवस्था की जगह केवल वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मिलता है और वर्ण व्यवस्था गुण तथा कर्म पर आधारित थी। व्यापक समाज में अस्पृश्यता की भावना का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। परंतु समय के साथ भारतीय समाज में जाति व्यवस्था और जाति संस्था पूर्ण रूप से स्थापित हो गई। औपनिवेशिक शासन काल में जाति

व्यवस्था का स्थाईकरण 1901 में रिजले द्वारा नस्ल आधारित जातीय गणना के रूप में उपस्थित हुआ। जातीय भेदभाव तथा अस्पृश्यता की भावना को दूर करने के लिए समय-समय पर तथाकथित उच्च जाति के अनेक महापुरुषों द्वारा प्रयास प्रारंभ किया गया। जिन प्रयासों की परिणिति अंततः भारतीय संविधान द्वारा भारत में सामाजिक समानता तथा अस्पृश्यता का अंत जैसे मूल अधिकारों की स्थापना के महत्वपूर्ण प्रयास के रूप में परिलक्षित हुई

2.0 राजा राममोहन राय

आधुनिक भारत में नवजागरण के जन्मदाता राजा राममोहन राय ने जहां सती प्रथा को समाप्त करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किया वहीं उन्होंने मृत्युंजयाचार्य द्वारा लिखित ग्रंथ वज्रसूची का अनुवाद किया जिसमें जातिगत भेदभाव का विरोध किया गया था। राममोहन राय ने जातीय भेदभाव को भारत की राष्ट्रीय एकता के निर्माण में एक बहुत बड़ी बाधा माना था। (दत्त, n.d., पृष्ठ 275-278)

3.0 महादेव गोविंद रानाडे

महाराष्ट्र के प्रमुख समाज सुधारक, अर्थशास्त्री और न्यायविद महादेव गोविंद रानाडे ने भारतीय समाज को आधुनिक और समतामूलक बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।एक सवर्ण ब्राह्मण होने के बावजूद, उन्होंने हिंदू समाज की रूढ़ियों की कड़ी आलोचना की और जातिगत भेदभाव को दूर करने के लिए प्रयास किया। प्रार्थना समाज के संगठन में उनकी प्रमुख भूमिका थी। प्रार्थना समाज द्वारा छुआछूत का विरोध किया गया तथा अंतर जातीय विवाह तथा सहभोज को प्रोत्साहित किया गया। 1887 में रानाडे ने 'भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन' की स्थापना की, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ही एक सामाजिक मंच था। इसके अधिवेशनों में उन्होंने पूरे देश के सुधारकों को एक मंच पर लाकर छुआछूत निवारण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्ताव पारित करवाए। उन्होंने राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों प्रकार के सुधारो की आवश्यकता को महत्वपूर्ण माना। जब 1892 में ब्रिटिश सरकार ने 'मार्शल रेस' का तर्क देकर महार और अन्य अछूत जातियों की सेना में भर्ती पर रोक लगा दी थी। जबकि सेना की नौकरी दलितों के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का मुख्य साधन थी। इस अन्याय के खिलाफ गोपाल बाबा वलंगकर और डॉ. अंबेडकर के पिता सूबेदार रामजी सकपाल ने आंदोलन किया। जस्टिस रानाडे ने अपने कानूनी ज्ञान का उपयोग करते हुए ब्रिटिश सरकार को भेजी जाने वाली उस ऐतिहासिक याचिका का मसौदा तैयार किया, जिसमें महार जाति के सैन्य अधिकारों की पुनः बहाली की मांग की गई थी। (Keer, 1971)

4.0 स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की तथा अद्वैत वेदांत के सिद्धांत के आधार पर सभी मनुष्यों में ईश्वर का वास माना और निर्धनों तथा पीड़ितों की सेवा करने पर जोर दिया यद्यपि उन्होंने जाति के महत्व को स्वीकार करते हुए उसे एकदम नकारा नहीं वह जाति को गुण के आधार पर निर्धारित मानते हुये जातीय भेदभाव का कड़ा विरोध करते थे। वह अपने को स्वामी रामकृष्ण परमहंस का शिष्य होने में गर्व की अनुभूति करते थे जिन्होंने ब्राह्मण कुल में जन्म लेने पर भी एक तथाकथित निम्न जाति के व्यक्ति के घर जाकर संडास की सफाई करने में भी संकोच नहीं किया। स्वामी विवेकानंद ने जातिगत भेदभाव का विरोध करते हुए छुआछूत की भावना को अंततः पागल खाने में पहचाने वाली बताया। । (Vivekananda, 2015).

5.0 स्वामी दयानंद सरस्वती तथा आर्य समाज

भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन के सुधारकों में महर्षि दयानंद सरस्वती का योगदान अप्रतिम है। पुरुष सूक्त के जिस मंत्र का अर्थ ईश्वर के विभिन्न अंगों से विभिन्न वर्णों की उत्पत्ति के रूप में किया जाता है उसे अर्थ का खंडन करते हुए स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसे समाज रूपी शरीर में विभिन्न वर्णों की अलंकार के रूप से प्रस्तुति बताया। उन्होंने वर्ण व्यवस्था को व्यक्ति के गुण, कर्म स्वभाव पर आधारित माना। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचार उनके ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में देखने को मिलते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने आर्य समाज नामक संस्था की स्थापना की। जाति व्यवस्था के विषय में महर्षि दयानंद सरस्वती ने प्रारंभ से ही क्रांतिकारी विचारों को प्रस्तुत किया। उन्होंने जन्मगत वर्तमान जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध किया उन्होंने किसी भी वर्ण के व्यक्ति को वेद पढ़ने का तथा यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार दिया। उन्होंने शास्त्रीय प्रमाणों तथा उदाहरणों द्वारा ब्राह्मण के शूद्र व शूद्र के ब्राह्मण

बनने के सिद्धांत को प्रस्तुत किया। (Saraswati, 2018). महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों व सिद्धांतों को उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज नामक संस्था ने व्यावहारिक रूप दिया। आर्य समाज के गुरुकुल में बिना किसी भेदभाव की सभी जाति के व्यक्तियों को वेद आदि पढ़ने का अधिकार दिया गया है तथा यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है। आर्य समाज ने जाति विषयक नाम के प्रयोग करने का भी समर्थन नहीं किया। आर्य समाज के विचारों और सिद्धांतों से अनेक विद्वानों ने प्रेरणा प्राप्त करके इन सिद्धांतों को समाज में स्थापित किया।

6.0 स्वामी श्रद्धानंद (जिनका पूर्व नाम मुंशीराम था) के जीवन और उनके सामाजिक सुधार के कार्यों की नींव में महर्षि दयानंद सरस्वती का स्पष्ट और गहरा प्रभाव था। 1879 में बरेली में स्वामी दयानंद से उनकी ऐतिहासिक मुलाकात ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। स्वामी श्रद्धानंद ने समाज में व्याप्त छुआछूत और ऊंच-नीच के भेदभाव को मिटाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। 1902 ई में उनके द्वारा गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की गई जहां तथाकथित उच्च जाति और दलित समुदाय के विद्यार्थी बिना किसी भेदभाव के एक साथ रहते, पढ़ते तथा भोजन करते थे। स्वामी श्रद्धानंद द्वारा दलित उद्धार सभा की स्थापना की गई तथा दलितों के लिए मंदिर प्रवेश, सार्वजनिक कुओं से पानी लेने के अधिकारों का समर्थन किया गया। हिंदू समाज में समानता लाने और जो लोग भेदभाव के कारण धर्मांतरित हो गए थे, उन्हें ससम्मान वापस लाने के लिए उन्होंने शुद्धि आंदोलन चलाया(Jordens, 1981). जिसका उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को समान धार्मिक तथा सामाजिक अधिकार दिलाना था। उन्होंने कांग्रेस के मंच से अछूतोद्धार के लिए एक वृहद योजना और फंड का प्रस्ताव रखा। जब उन्हें लगा कि कांग्रेस नेतृत्व दलितों के उत्थान के प्रति गंभीर नहीं है और पर्याप्त सहयोग नहीं दे रहा है, तो उन्होंने अपने सिद्धांतों से समझौता न करते हुए कांग्रेस की उप-समिति से इस्तीफा दे दिया। डॉ. अंबेडकर ने स्वामी श्रद्धानंद के निस्वार्थ प्रयासों की सराहना करते हुए अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *"What Congress and Gandhi have done to the untouchables"* में लिखा था:"The Swami was the greatest and the most sincere champion of the Untouchables." (Ambedkar, 1945)

7.0 लाला लाजपत राय प्रख्यात आर्य समाजी लाला लाजपत राय ने राजनीतिक स्वतंत्रता को सामाजिक समानता से जोड़कर देखा। उन्होंने स्पष्ट किया कि अछूतों के उद्धार के बिना राष्ट्र निर्माण संभव नहीं है।लाला लाजपत राय ने न केवल वैचारिक स्तर पर छुआछूत का विरोध किया, बल्कि 1921 में 'लोक सेवक मंडल' की स्थापना कर इसके तत्वावधान में दलितों के उत्थान के लिए विभिन्न 'अछूतोद्धार समितियों' का गठन भी किया (Nagar, 1977)।"1920 के दशक में, लाला जी ने पंडित मदन मोहन मालवीय के साथ मिलकर उत्तर भारत में कई अछूतोद्धार कमेटियों का मार्गदर्शन किया। 1927 में हुए 'अखिल भारतीय अछूतोद्धार सम्मेलन' की अध्यक्षता भी लाला लाजपत राय ने ही की थी, जहाँ उन्होंने अछूतों को सार्वजनिक कुओं और स्कूलों के उपयोग का अधिकार देने का कड़ा प्रस्ताव पारित किया था। (Nagar, 1977)

8.0 कोल्हापुर के छत्रपति शाहूजी महाराज शाहूजी महाराज भारत के इतिहास में पहले ऐसे शासक थे जिन्होंने प्रशासन में जातिगत एकाधिकार को तोड़ा। 1902 ई. में, उन्होंने कोल्हापुर राज्य की नौकरियों में पिछड़े वर्गों के लिए 50% आरक्षण लागू किया। यह कदम सामाजिक न्याय की दिशा में एक अभूतपूर्व प्रयोग था। उन्होंने राज्य में प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य कर दिया। अछूत और पिछड़ी जातियों के छात्रों के लिए उन्होंने कोल्हापुर में कई छात्रावास खोले, 1919 में उन्होंने एक ऐतिहासिक आदेश जारी कर कोल्हापुर राज्य के सभी सार्वजनिक स्थानों (अस्पतालों, कुओं, सरकारी दफ्तरों) पर छुआछूत को दंडनीय अपराध घोषित कर दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 'अंतरजातीय' और 'अंतरधार्मिक' विवाहों को कानूनी मान्यता प्रदान की, जो उस समय एक बहुत बड़ा साहसिक कदम था।1920 में जब डॉ अंबेडकर ने शोषितों की आवाज़ उठाने के लिए 'मूकनायक' नामक समाचार पत्र शुरू किया, तो शाहूजी महाराज ने ही उन्हें इसके प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता दी थी। साहू जी महाराज प्रारंभ में सत्यशोधक समाज से जुड़े थे परंतु उन्होंने महसूस किया कि सत्यशोधक समाज का दृष्टिकोण कभी-कभी बहुत उग्र हो जाता था, जिससे समाज के एक बड़े वर्ग में तीखी प्रतिक्रिया होती थी। इसके विपरीत, आर्य समाज हिंदू धर्म के भीतर रहकर, उसकी मूल वैदिक भावना को बनाए रखते हुए एक सकारात्मक और

सर्व-समावेशी सुधार की बात करता था। इसलिए उन्होंने कहा कि "व्यापक सुधार" (जो सभी वर्गों को स्वीकार्य हो) आर्य समाज ही कर सकता है। (Keer, 1976)

9.0 विनायक दामोदर सावरकर

विनायक दामोदर सावरकर के जाति-विरोधी सुधारों पर स्वामी दयानंद सरस्वती के 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्य समाज के शुद्धि आंदोलन का स्पष्ट वैचारिक प्रभाव देखा जा सकता है (Bapu, 2013)। इसी तार्किक और सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रेरित होकर सावरकर ने अपने रत्नागिरी निर्वासन के दौरान जन्म-आधारित जाति व्यवस्था की 'सप्त बेड़ियों' (Seven Shackles) को तोड़ने का ऐतिहासिक अभियान चलाया था (Keer, 1966)

इस प्रकार आर्य समाज के अन्य विद्वानों में महात्मा हंसराज, भाई परमानंद, तथा आर्य समाज के अनेक कार्यकर्ता अस्पृश्यता के विरोध, सहभोज, अंतरजातीय विवाह के समर्थक रहे। लाहौर में स्थापित जाति-पाति तोड़क मंडल इसके संस्थापक संतराम बी ए थे। आर्य समाज से ही संबंधित था।(Ambedkar, 2014) डॉ अंबेडकर को उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप देने वाले **बड़ौदा राज्य** के शासक **महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय** पर आर्य समाज का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है , आर्य समाज के अस्पृश्यता निवारण और सार्वभौमिक शिक्षा के सिद्धांतों से प्रेरित होकर ही उन्होंने अपने राज्य में अछूतों के लिए स्कूल खोले। उन्होंने शिक्षा के प्रसार के लिए आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से बड़ौदा आमंत्रित भी किया था (Hardiman, 2007)।

10. महात्मा गांधी

महात्मा गांधी का दृढ़ विश्वास था कि अस्पृश्यता हिंदू समाज पर एक गंभीर कलंक है, जिसे मिटाना स्वराज्य की प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। गांधी जी दलित जातियों को हिंदू समाज का ही अभिन्न अंग मानते थे और उन्हें हिंदुओं से पृथक देखने के सख्त खिलाफ थे।1932 में जब ब्रिटिश सरकार ने 'कम्युनल अवार्ड' की घोषणा की और दलितों के लिए पृथक निर्वाचन का प्रावधान किया, तो गांधी जी ने इसका कड़ा विरोध किया। उनका स्पष्ट मत था कि पृथक निर्वाचन हिंदू समाज को राजनीतिक और सामाजिक रूप से हमेशा के लिए विभाजित कर देगा (Chandra, 1989)। इसके विरोध में उन्होंने यरवदा जेल में आमरण अनशन शुरू कर दिया। इस अनशन के परिणामस्वरूप 24 सितंबर 1932 को डॉ. बी.आर. अंबेडकर और सवर्ण हिंदू नेताओं के बीच ऐतिहासिक 'पूना पैक्ट' (Poona Pact) संपन्न हुआ। इस समझौते के तहत दलितों के लिए पृथक निर्वाचन को समाप्त कर दिया गया, लेकिन इसके बदले प्रांतीय विधानमंडलों में उनके लिए सुरक्षित सीटों की संख्या 71 से बढ़ाकर 147 कर दी गई (Bandyopadhyay, 2004)।पूना पैक्ट के तुरंत बाद गांधी जी ने अपना पूरा जीवन अछूतोद्धार के लिए समर्पित कर दिया। 1932 में ही उन्होंने 'अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी लीग' (बाद में हरिजन सेवक संघ) की स्थापना की। उन्होंने दलितों को 'हरिजन' नाम दिया और 1933 में 'हरिजन' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया (Gandhi, 1954)। सवर्ण हिंदुओं में 'हृदय परिवर्तन' लाने और हरिजनों के मंदिर प्रवेश के अधिकारों के लिए उन्होंने 1933-1934 तक पूरे देश में 20,000 किलोमीटर लंबी 'यात्रा की। इसके बाद जब भारत का संविधान बना तो संविधान निर्माण में सभी जाति के लोगों ने समानता की मूल अधिकार को स्वीकार किया। तथा महात्मा गांधी की जय घोष के साथ अस्पृश्यता के अंत का अनुच्छेद पारित हुआ।

11.**निष्कर्ष**

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में यह निष्कर्ष निकलता है की जाति असमानता जिसने भारतीय समाज में असमानता स्थापित कर समाज को खंडित कर रखा था के विरोध में न केवल तथाकथित निम्न जाति के महान पुरुषों ने अपना योगदान दिया अपित तथाकथित उच्च जाति के अनेक महान पुरुषों ने समानता स्थापित करने के लिए कार्य किया। जिसमें आर्य समाज तथा उससे जुड़े विभिन्न महान पुरुषों का योगदान महत्वपूर्ण है। साथ ही महात्मा गांधी का इस दिशा में किया गया प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- Ambedkar, B. R. (1945). *What Congress and Gandhi have done to the untouchables*. Thacker & Co., Ltd.
- Ambedkar, B. R. (2014). *Annihilation of caste: The annotated critical edition* (S. Annand, Ed.). Verso Books. (Original work published 1936).
- Bandyopadhyay, S. (2004). *From Plassey to partition: A history of modern India*. Orient Blackswan.
- Bapu, P. (2013). *Hindu Mahasabha in colonial North India, 1915-1930: Constructing nation and history*. Routledge.
- Chandra, B. (1989). *India's struggle for independence*. Penguin Books.
- Datta, K. C. (n.d.). *Raja Rammohan Roy: Jeevan aur darshan* [Raja Rammohan Roy: Life and philosophy] (1st ed.). Sahitya Akademi.
- Gandhi, M. K. (1954). *The removal of untouchability*. Navajivan Publishing House.
- Hardiman, D.(2007).Purifying the nation:The Arya Samaj in Gujarat 1895–1930.*The Indian Economic & Social History Review, 44* (1), 41-65.
- Jordens, J. T. F. (1981). *Swami Shraddhanand: His life and causes*. Oxford University Press.
- Keer, D. (1966). *Veer Savarkar*. Popular Prakashan.
- Keer, D. (1971). *Dr. Ambedkar: Life and mission* (3rd ed.). Popular Prakashan.
- Keer, D. (1976). *Shahu Chhatrapati: A royal revolutionary*. Popular Prakashan.
- Nagar, P. (1977). *Lala Lajpat Rai: The man and his ideas*. Manohar Book Service.
- Saraswati, D. (2018). *Satyarth Prakash*. Aryavart Prakashan.
- Vivekananda, S. (2015). *Jaati, sanskriti aur samajwad* [Caste, culture and socialism] (D. Tiwari, Trans.; 15th ed.). Ramakrishna Math

Cite this Article:

राहुल[1] एवं डॉ शगुफ्ता परवीन[2],“ जातीय समानता स्थापित करने के लिए तथाकथित उच्च जाति के महापुरुषों द्वारा किए गए प्रयासों विशेष रूप से स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.137-141, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

राहुल एवं डॉ शगुफ्ता परवीन

For publication of research paper title

जातीय समानता स्थापित करने के लिए तथाकथित उच्च जाति के महापुरुषों द्वारा किए गए प्रयासों विशेष रूप से स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.15